अध्याय 13

वाचा को लागू करना

नहेम्याह का अंतिम अध्याय एक अंतिम टिप्पणी प्रदान करता है कि शहरपनाह के समर्पण के तुरंत बाद क्या हुआ। इसके अतिरिक्त, पुस्तक में नहेम्याह जब वह दूसरी बार अधिपति बनाकर यरूशलेम आया, तब उसके द्वारा लाए गए सुधारों का वर्णन भी है।

विदेशियों को इस्राएलियों से पृथक किया गया (13:1-3)

[1]उसी दिन मूसा की पुस्तक लोगों को पढ़कर सुनाई गई; और उसमें यह लिखा हुआ मिला, कि कोई अम्मोनी या मोआबी परमेश्वर की सभा में कभी न आने पाए; [2]क्योंकि उन्होंने अन्न जल लेकर इस्राएलियों से भेंट नहीं की, वरन् बिलाम को उन्हें शाप देने के लिये दक्षिणा देकर बुलवाया था - तौभी हमारे परमेश्वर ने उस शाप को आशीष में बदल दिया। [3]यह व्यवस्था सुनकर, उन्होंने इस्राएल में से मिली जुली भीड़ को अलग अलग कर दिया।

"उसी दिन" परमेश्वर के वचन पढ़े जाने पर यहूदियों ने अपने आप को विदेशियों से पृथक कर लिया।

आयतें 1-3. मूसा की पुस्तक, जो संभवतः पेंटाट्युक के लिए आया है, **लोगों को पढ़कर सुनाई गई**। वह विशिष्ट नियम जिसका उल्लेख आया है - **कि कोई अम्मोनी या मोआबी परमेश्वर की सभा में कभी न आने पाए** (13:1) - व्यवस्थाविवरण 23:3-6 से है।

यह व्यवस्था सुनकर, उन्होंने इस्राएल में से मिली जुली भीड़ को अलग अलग कर दिया (13:3)। इब्रानी लेख में प्रयुक्त "विदेशियों" (עֵרֶב, *'एरेब*), निर्गमन 12:38 में "मिली जुली भीड़" के लिए भी आया है। इस शब्द को 13:3 में KJV "मिली जुली भीड़" कहती है। इस तथ्य के विषय कि "सभी विदेशी" पृथक कर दिए गए थे, ए. ई. कुंडल ने टिप्पणी की, "एदोमियों और मिस्रियों से [व्यव. 23:7, 8 में] अधिक नम्रता से व्यवहार किया गया, परन्तु निष्कासन के बाद की स्थिति में प्रतीत होता है कि व्यवस्था का अधिक कठोर पालन किया गया।"[1]

इस पृथक करने के कारण को दिया गया है: निर्गमन के बाद के समय में, अम्मोनियों और मोआबियों ने इस्राएलियों के प्रति, जब वे अपने नए देश की ओर जा रहे थे, अतिथि-सत्कार (**अन्न जल लेकर** भेंट) नहीं दिखाया था। वरन, इसके

स्थान पर मोआबियों ने भविष्यद्वक्ता **बिलाम को उन्हें शाप देने के लिये बुलवाया था** (देखें गिनती 22-24)। यद्यपि उस अवसर पर **परमेश्वर ने उस शाप को आशीष में बदल दिया** (13:2; देखें गिनती 24:10), बिलाम ने बाद में विदेशियों के साथ इस्राएलियों को पाप में फंसाने का षड्यंत्र रचा था (देखें गिनती 31:15, 16)। बिलाम "तलवार से घात हुआ" जब इस्राएलियों को आज्ञा दी गई कि उन्हें पाप में फंसाने वालों को मार डालें (गिनती 31:1, 2, 8)। नए नियम में इस भविष्यद्वक्ता की बारंबार भर्त्सना हुई है (2 पतरस 2:15, 16; यहूदा 11; प्रका. 2:14)।

दो प्रश्न शेष हैं। पहला है, यहूदियों ने "सभी विदेशियों" को पृथक कब किया? लेख कहता है **उसी दिन**। ये शब्द "उस समय पर" के लिए एक सामान्य अभिव्यक्ति हो सकते हैं (NAB; NJB; NJPSV)।[2] तो फिर व्यवस्था का पढ़ा जाना भी कभी भी हो सकता है। जेकब एम. मेयर्स ने लिखा, "मूसा के तोरह से पढ़ा जाना नियमित रीति से सामाजिक उत्सवों में और निश्चय ही एक या दूसरे उद्देश्य से बुलाए गए सम्मेलनों में नियमित रूप से किया जाता रहा होगा [देखें 8:1-8, 13, 14, 18]।"[3]

कुछ 13:1-3 को अध्याय में बाद में चर्चित सुधारों, विशेषकर 13:7-9 में अम्मोनी तोबिय्याह के परिचय के समान देखते हैं। वे व्यवस्था के पढ़े जाने को नहेम्याह के सूसा से लौटने के साथ जोड़ते हैं, जिसका उल्लेख 13:6, 7 में किया गया है। उदाहरण के लिए पौल ए. स्टीवार्ट ने कहा, यद्यपि 13:1-3 के आरंभिक शब्द उसी समय का संकेत करते हैं जो 12:44 का है, "अधिक प्रत्यक्ष संबंध उसके बाद की घटना के साथ है, अर्थात, नहेम्याह और अम्मोनी तोबिय्याह के मध्य टकराव (13:4-9; देखें 2:19)"[4] के साथ।

अन्य इसे शहरपनाह के समर्पण के तुरंत बाद अथवा उसके साथ के समय का उल्लेख समझते हैं। हो सकता है कि समर्पण समारोह के एक भाग के रूप में विशाल भीड़ को व्यवस्था "ऊँचे स्वर में पढ़कर" सुनाई गई। यदि ऐसा था, तो लोगों ने पुनः निर्मित शहरपनाह के समर्पण के समय उसे पढ़े जाने के परिणामस्वरूप अपने आप को परदेशियों से पृथक किया। इस पृथक होने के द्वारा नहेम्याह द्वारा बाद में लाए गए सुधारों के लिए तैयारी हुई, जब यहूदियों ने, नहेम्याह की अनुपस्थिति, में उनके द्वारा पहले "सभी परदेशियों को अलग करने" के सही कार्य के साथ तुलना की। नहेम्याह जब गया हुआ था, तब तोबिय्याह ने मंदिर में रहना आरंभ कर दिया था और कुछ लोगों ने परदेशी स्त्रियों के साथ विवाह कर लिया था।

दूसरा प्रश्न है, यहूदियों ने "मिली जुली भीड़ को अलग अलग करने" के लिए वास्तव में क्या किया? उसके मूल संदर्भ में, मोआबियों और अम्मोनियों के विरोध में दिए गए निर्देश का उद्देश्य था इस्राएलियों को विधर्मियों के साथ, जो उनके शत्रु रहे थे, मिलने-जुलने से रोक कर रखना। इसका उद्देश्य किसी भी जाति के लोगों का इस्राएलियों के साथ सम्मिलित हो जाना, यदि वे अपने देवी-देवताओं को त्याग कर प्रभु और उसकी व्यवस्था को ग्रहण करने को तैयार थे, रोकने के लिए नहीं था। मोआबी रूत का परमेश्वर के परिवार में स्वागत हुआ और वह राजा दाऊद की पूर्वज हुई।

डेरेक किडनर ने यहाँ व्यवस्थाविवरण 23 से उद्धृत की गई निषेधाज्ञा को जानबूझकर "कठोर और बिना शर्त का, जिससे कि सर्वाधिक प्रबल प्रभाव पड़ सके" बताया। उन्होंने फिर कहा कि, "अम्मोनी या मोआबी, उसके मूल रूप, इस्राएल के कट्टर शत्रु के रूप में यहाँ दिखाए गए हैं।" इसकी तुलना में, "जो मोआबिन रूत के समान परिवर्तित होकर आते थे" उनका "बहुत भिन्न स्वागत होता था।"[5]

यद्यपि व्यवस्था का लागू किया जाना यहूदियों द्वारा परदेशियों को देश से निष्कासित करने की माँग नहीं करता था, किन्तु यह माँग अवश्य करता था कि जो यहूदी मत में परिवर्तित नहीं हुए हैं वे उनकी धार्मिक प्रक्रियाओं से अलग रहे। ऐसे लोगों के लिए उनके उत्सवों, सभाओं, या बलिदानों में सम्मिलित होने की अनुमति नहीं थी; वे मंदिर के प्रांगणों से प्रतिबंधित थे।[6]

यह महत्वपूर्ण हो सकता है कि वॉल्. कहता है कि परदेशियों को परमेश्वर के लोगों, "इस्राएल," से अलग किया गया न कि "यहूदा" से जहाँ लोग निवास करते थे। वास्तव में जब कोई परदेशी परिवर्तित होता था, तो वह इस्राएल का भाग हो जाता था, और फिर उसे, उदाहरण के लिए, मोआबी या अम्मोनी नहीं, वरन इस्राएली समझा जाता था।

नहेम्याह के सुधार (13:4-29)

नहेम्याह के यहूदा का अधिपति होने के दूसरे सत्र के लिए लौटने से पहले, यहूदी परमेश्वर की वाचा की आज्ञाकारिता करने की अपनी प्रतिज्ञा के प्रति अविश्वासयोग्य हो गए थे। उनके पाप के कारण कई सुधार करने पड़े जिन्हें नहेम्याह ने लौट कर आने के बाद कार्यान्वित किया।

नहेम्याह फारस के लिए "राजा अर्तक्षत्र के बत्तीसवें वर्ष में," या लगभग 433 ई.पू. में चला गया था (13:6)। लेख यह नहीं बताता है कि वह कितने समय के लिए चला गया था; हो सकता है कि वह एक वर्ष से कम के लिए गया हो या कई वर्षों के लिए गया हो। नहेम्याह के यहूदा लौटने की तिथि सामान्यतः 432 ई.पू. लगाई जाती है। किन्तु यदि वह बाबुल में (या शूशा में, जो राजा के रहने के स्थान पर निर्भर है) अधिक लंबे समय तक रहा, तो वह यरूशलेम 429 या 428 ई.पू. या इससे भी बाद तक नहीं लौटा होगा। अर्तक्षत्र ने फारस के राजा के रूप में 423 ई.पू. तक राज्य किया था। नहेम्याह के लंबे समय तक रहने और देर से लौटने के पक्ष में इस अध्याय में बताए गए मिश्रित विवाह और उनसे होने वाले बच्चे हैं, जिनमें से कुछ नहेम्याह के लौटने तक इतने बड़े हो चुके थे कि वे बोल सकते थे (13:23, 24)।

यद्यपि पुस्तक यह नहीं कहती है कि लौटने के समय नहेम्याह अधिपति था, सभी प्रमाण दिखाते हैं कि वह था। वह राजा की अनुमति से लौट कर आया था, और उसने ऐसा व्यवहार किया मानो उसके साथ फारस के राजा का अधिकार है, और उसके साथ "सेवक" थे जिन्हें वह शहर के द्वारों पर नियुक्त कर सका जिससे उसकी (तथा परमेश्वर की) आज्ञाओं का पालन हो (13:19)। पुस्तक के पहले भाग

तथा इस अध्याय में उसकी भूमिका में कोई प्रत्यक्ष भिन्नता दिखाई नहीं देती है। यदि वह अधिपति था जब उसने शहरपनाह के पुनः निर्माण का निरीक्षण किया, तो वह अधिपति था जब उसने तोबिय्याह को मंदिर से बाहर निकाल दिया।

नहेम्याह जब अपने अधिपति होने के दूसरे सत्र के लिए आया, उसने पाया कि कुछ यहूदी परमेश्वर के विमुख हो गए हैं। जिस सुधार प्रक्रिया का आरंभ उसने यरूशलेम में अपने पहले निवास के समय आरंभ किया था, वह आगे नहीं बढ़ रही थी, और प्रतीत होता था कि लोग अपने द्वारा की गई गंभीर प्रतिज्ञाओं को भूल चुके हैं (देखें 10:28-31)। तोबिय्याह के महायाजक पर प्रबल प्रभाव के कारण मंदिर अपवित्र हो गया था (13:4, 5)। लोगों ने लेवियों और गवैयों की ठीक से देखभाल नहीं की थी, जिससे मंदिर में आराधना के स्तर में घटी हुई थी (13:10)। सब्त के दिन का मानना, बेचने वालों के द्वारा, जो उस पवित्र दिन में यरूशलेम में अपने उत्पाद बेचते थे (13:15), क्षीण कर दिया गया था। यहूदियों ने मिश्रित विवाह कर लिए थे, जिससे उनके विश्वास और संस्कृति पर खतरा आ गया था (13:23, 24)।[7] नहेम्याह जब पहली बार आया था, उसे टूटी हुई शहरपनाह मिली थी (2:11-16); जब वह दूसरी बार आया, तो उसे "एक टूटा हुआ समुदाय" मिला।[8] इसके बाद की आयतों में, कोई व्यक्ति जान पाता है कि कैसे नहेम्याह ने इस "टूटे हुए समुदाय" के लोगों का हियाव बाँधा।

मंदिर की कोठरियों का स्वच्छ किया जाना (13:4-9)

[4]इससे पहले एल्याशीब याजक जो हमारे परमेश्वर के भवन की कोठरियों का अधिकारी और तोबिय्याह का सम्बन्धी था। [5]उसने तोबिय्याह के लिये एक बड़ी कोठरी तैयार की थी जिसमें पहले अन्नबलि का सामान और लोबान और पात्र और अनाज, नये दाखमधु और टटके तेल के दशमांश, जिन्हें लेवियों, गवैयों और द्वारपालों को देने की आज्ञा थी, रखी हुई थी; और याजकों के लिये उठाई हुई भेंट भी रखी जाती थी। [6]परन्तु मैं इस समय यरूशलेम में नहीं था, क्योंकि बेबीलोन के राजा अर्तक्षत्र के बत्तीसवें वर्ष में मैं राजा के पास चला गया। फिर कुछ दिनों के बाद राजा से छुट्टी माँगी, [7]और मैं यरूशलेम को आया, तब मैं ने जान लिया कि एल्याशीब ने तोबिय्याह के लिये परमेश्वर के भवन के आँगनों में एक कोठरी तैयार कर, कैसी बुराई की है। [8]इसे मैं ने बहुत बुरा माना, और तोबिय्याह का सारा घरेलू सामान उस कोठरी में से फेंक दिया। [9]तब मेरी आज्ञा से वे कोठरियाँ शुद्ध की गईं, और मैं ने परमेश्वर के भवन के पात्र और अन्नबलि का सामान और लोबान उनमें फिर से रखवा दिया।

नहेम्याह द्वारा किए गए सुधारों में से पहला था मंदिर में अपवित्र की गई कोठरियों को शुद्ध करना।

आयतें 4-6. *समस्या।* अभिव्यक्ति **इससे पहले** से प्रतीत होता है, मानो अभिप्राय "यहूदियों के द्वारा परदेशियों को इस्राएल से पृथक करने से पहले" हो

(13:4)। किन्तु, नहेम्याह ने बाद में लिखा, **परन्तु मैं इस समय यरूशलेम में नहीं था** (13:6)। यह वाक्य संकेत करता है कि जब एल्याशीब ने तोबिय्याह के लिए मंदिर में कोठरी तैयार की (13:5), उस समय नहेम्याह वहाँ नहीं था। इसलिए "इससे पहले" को समझने का सर्वोत्तम तात्पर्य है "मेरे यरूशलेम को लौटने से पहले।"

एल्याशीब याजक की पहचान समस्या उत्पन्न करती है। कुछ इस पर संदेह करते हैं कि वह पुस्तक में बारंबार उल्लेखित "महायाजक एल्याशीब" (3:1, 20; 12:10, 22; 13:28) है। वे अपना निष्कर्ष दो तर्कों पर आधारित करते हैं: (1) यहाँ जिस व्यक्ति का उल्लेख आया है उसे "महायाजक" कहकर संबोधित नहीं किया गया है। (2) महायाजक को मंदिर की **कोठरियों का अधिकारी** नियुक्त नहीं किया जाता। किन्तु फिर भी यह अधिक संभव लगता है कि आयत 4 का "एल्याशीब" वास्तव में महायाजक ही था। उसका "कोठरियों का अधिकारी" होने की नियुक्ति अधिपति नहेम्याह द्वारा की गई हो सकती है (देखें 13:30)। यदि ऐसा है तो, यह उसके द्वारा निभाए जाने वाले अनेकों दायित्वों में से एक था। यदि यह सत्य है तो एल्याशीब महायाजक का उल्लेख और तोबिय्याह तथा सम्बल्लत के साथ उसके संबंध इस वॉल्. (12:4, 5, 28, 29) का ढाँचा/चौखटा प्रदान करते हैं।

नहेम्याह की अनुपस्थिति में एल्याशीब ने तोबिय्याह के लिए **एक बड़ी कोठरी तैयार की थी** (13:5)। इस आयत तथा इसके बाद की आयतों में जिस शब्द का अनुवाद "कोठरी" हुआ है (לִשְׁכָּה, *लिश्काह*, तथा נִשְׁכָּה, *निश्काह*) उसका अनुवाद कमरा/कक्ष भी किया जा सकता है (KJV; ESV)।

पहले **तोबिय्याह** (13:4) का परिचय "अम्मोनी" कहकर दिया गया था, जो दोनों, नहेम्याह का शत्रु (2:10, 19) तथा कुछ यहूदी हाकिमों का मित्र था (6:17-19)। तोबिय्याह को मंदिर में कोठरी की क्यों आवश्यकता थी, इसे स्पष्ट नहीं किया गया। संभव है कि वह अम्मोन में रहता हो, और जब वह कारोबार के लिए यरूशलेम आता हो तो उस अस्थाई निवास के लिए स्थान की आवश्यकता हो। क्योंकि तोबिय्याह और सम्बल्लत ने नहेम्याह का विरोध किया था जब वह शहरपनाह बनाने के लिए पहली बार आया था, इसलिए निःसंदेह यहूदियों के ये शत्रु यहूदियों की निसहाय स्थिति का लाभ उठा रहे थे। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि जब नहेम्याह पूर्व को वापस लौट गया, तब तोबिय्याह ने भी शहर में अपने लाभदायक कारोबार को लौट जाने का अवसर देखा; और एल्याशीब ने उसके लिए यह करना सहज कर दिया। ऐसे निवास-स्थान से यहूदी समुदाय में उसकी सामर्थ्य और प्रभाव में वृद्धि होती।

तोबिय्याह और एल्याशीब के मध्य के संबंध का सटीक विवरण दिया नहीं गया है। जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद **सम्बन्धी** (קָרוֹב, *करोब*) हुआ है उसका शब्दार्थ है "निकट का" या "समीप का।" याजक विवाह द्वारा तोबिय्याह के "संबंधी" हो सकते थे, या वे दोनों घनिष्ठ मित्र अथवा कारोबार में सहयोगी हो सकते थे। मुख्य तथ्य यह था कि तोबिय्याह को मंदिर में होने का कोई अधिकार नहीं था,

और एल्याशीब को उसे वह स्थान उपलब्ध नहीं करवाना चाहिए था। जिस प्रकार से तोबिय्याह के लिए कोठरी तैयार करवाई गई, याजक ने उससे स्थिति को और बिगाड़ दिया था, मंदिर के सेवकों और लोगों के लिए आवश्यक प्रावधानों को कोठरी से हटवाने के द्वारा। इसमें **अन्नबलि का सामान** और **लोबान** और **पात्र** और **अनाज, नये दाखमधु** और **टटके तेल के दशमांश** भी था (13:5)। क्योंकि लोगों ने दशमांश देने की उपेक्षा की थी (13:10-12), इसलिए तोबिय्याह के लिए स्थान बनाने के लिए कम ही सामान को बाहर निकालने की आवश्यकता पड़ी होगी।

नहेम्याह ने प्रथम वचन में बात करते हुए[9] स्पष्ट किया कि यह तब हुआ जब वह देश से बाहर था। तात्पर्य यह है कि, यदि वह वहाँ होता, तो वह मंदिर के अशुद्ध किए जाने को कदापि न होने देता। उसने लिखा कि वह **राजा के** पास **अर्तक्षत्र के बत्तीसवें वर्ष में**, लगभग 433 ई.पू. में चला गया था (13:6)। उसने यह नहीं बताया कि वह कितने समय तक वहाँ रहा था, परन्तु उसने साथ ही यह भी लिखा कि अन्ततः उसने यहूदा लौट जाने की अनुमति प्राप्त की।

यहाँ फारस के राजा अर्तक्षत्र को **बेबीलोन का राजा** क्यों कहा गया है? इसका एक संभावित उत्तर है कि वह उस समय बाबुल में निवास कर रहा था। एच. जी. एम. विलियमसन इस प्रश्न के प्रति अनिश्चित थे। उन्होंने कहा, "यह उपाधि [बेबीलोन का राजा] वैध रीति से किसी एकैमेनिड राजा के द्वारा प्रयोग की जा सकती थे," परन्तु उन्होंने कहा कि यह अधिक संभव है "कि नहेम्याह के उसके पास लौटने के समय अर्तक्षत्र बाबुल में रह रहा था।"[10]

आयतें 7-9. *समाधान।* जब नहेम्याह **यरूशलेम** लौटा और उसने **जान लिया कि एल्याशीब ने तोबिय्याह के लिये कैसी बुराई की है** (13:7), तो वह क्रोधित हुआ। उसने कहा, **इसे मैं ने बहुत बुरा माना**, और उसने तुरंत इस गलती को सुधारने के लिए प्रभावी कार्यवाही की। उसने **तोबिय्याह का सारा घरेलू सामान उस कोठरी में से फेंक दिया** (13:8)। नहेम्याह ने जब यह किया - साथ ही जब उसने लोगों को "पिटवाया" और उनके "बाल नुचवाए" (13:25) - तो संभवतः उसने उन व्यक्तियों का प्रयोग किया जो अधिपति होने के नाते उसके साथ थे। अध्याय में बाद में, उसने उन्हें शहर के द्वारों के द्वारपाल होने के लिए "सेवक" नियुक्त किया (13:19)। वे अंगरक्षक, पुलिस, या सैनिकों के समान कार्य करते थे।

तोबिय्याह के सामान के हटाए जाने के पश्चात, नहेम्याह ने आज्ञा दी कि **कोठरियाँ** शुद्ध की जाएं। आयत 7 और 8 में एकवचन "कोठरी" प्रयोग हुआ है किन्तु आयत 9 में यह बहुवचन है। प्रतीत होता है कि "कोठरियाँ" में तोबिय्याह द्वारा प्रयोग होने वाला तथा उसके साथ के अन्य भी सम्मिलित थे। जब एक बार कोठरियाँ **शुद्ध की गईं**, तो नहेम्याह ने उनमें रखा जाने वाला सामान **फिर से रखवा दिया** (13:9)।

हमारे लिए नहेम्याह के द्वारा इस अध्याय में की गई कार्यवाही का अनुमोदन करना कठिन हो सकता है। बहुत से लोग किसी भी बात को "गलत" या "बुरा" कहने, और इस कारण उन्हें सुधारे जाने की आवश्यकता होना कहने से संकोच करते हैं। यदि हम किसी कार्य को देखें भी कि वह "बुरा" है, तो संभवतः हम उससे

सीधे-सीधे या प्रबल रूप से सामना करना नहीं चाहते हैं। हम उसके प्रति अपनी अस्वीकृति भर दिखाना पसन्द कर सकते हैं। हम किसी को जो वह कर रहा है उसे नहीं करने के लिए मनाने का प्रयास कर लेंगे, परन्तु किसी को बल पूर्वक उस बुराई को करने से रोकने का विचार हमें प्रतिकूल लगता है। हम नहेम्याह के कार्यों को मिश्रित भावनाओं के साथ देख सकते हैं, यह विचार रखते हुए कि "यह अच्छा था कि उसने उन सुधारों को करने के लिए लोगों की अगुवाई की, परन्तु संभवतः उसे उन्हें कुछ नम्रता के साथ करना चाहिए था।"

नहेम्याह का व्यवहार कठोर लग सकता है। उस पर आरोप लगाया गया है कि उसने तोबिय्याह के सामान को कोठरियों से निकाल फेंकने को कुछ सीमा तक "व्यक्तिगत द्वेष" के अन्तर्गत किया और साथ ही "क्रोध के आवेश" में आकर किया।[11] एक लेखक ने कहा कि परदेशी पत्नियां रखने वाले पुरुषों के प्रति नहेम्याह का व्यवहार "विचित्र और दूरी उत्पन्न करने वाला" है और साथ ही कहा, "नहेम्याह ऐसा अगुवा नहीं है जो युक्ति और कूटनीति से समझाता है। उसकी कार्यविधि सीधी, शारीरिक और धमकी देने वाली है। उसमें बहुत कम प्रशंसनीय है।"[12]

हमें नहेम्याह के पद और कार्यविधि को स्मरण रखना चाहिए। उसने बल को अपना प्राथमिक उपाय नहीं बनाया। पहले भी उसने समझाने-बुझाने, सामाजिक लज्जा, स्वयं अपना उदाहरण, व्यवस्था का पढ़ा जाना, और परमेश्वर के साथ वाचा के नवीनीकरण का उपयोग लोगों को उनके पापों से मोड़ने के लिए किया था। वह शारीरिक बल के प्रयोग पर तब ही आया जब लोगों ने हृदय की अत्याधिक कठोरता को दिखाया। अध्याय 13 में भी, उसने पाप के साथ बिलकुल इसी प्रकार से व्यवहार नहीं किया। इस अवसर पर नहेम्याह द्वारा बल का प्रयोग दिखाता है कि चरम समस्याओं के समाधान भी चरम विधियों से ही होते हैं।

इसके अतिरिक्त, नहेम्याह यहूदा का अधिपति था, फारस के राजा द्वारा विधान को लागू करना सुनिश्चित करने के लिए नियुक्त धर्मनिरपेक्ष अधिकारी; और देश का विधान मूसा की व्यवस्था थी! इसलिए, उसे व्यवस्था को लागू करवाने का पूरा अधिकार था।[13] नहेम्याह को पूरा अधिकार था कि वह तोबिय्याह के सामान को मंदिर की कोठरी से बाहर फेंक दे, और बाद में, व्यवस्था का उल्लंघन करने वालों को कोसे और उन्हें पिटवाए और उनके बाल नुचवाए (13:25)। परन्तु हम भिन्न परिस्थिति में रहते हैं। मसीही व्यवस्था आत्मिक है, "इस संसार की नहीं" है (यूहन्ना 18:36)। इसलिए नए नियम में मसीहियों द्वारा की गई गलतियों के लिए दिए गए समाधान आत्मिक हैं, शारीरिक नहीं। कलीसिया के अनुशासन में संगति विच्छेद करना है न कि शारीरिक ताड़ना देना। नया नियम कलीसिया को यह अधिकार अथवा दायित्व नहीं देता है कि गैर-मसीहियों को दण्ड दे, चाहे उनका अपराध कुछ भी हो। नहेम्याह का व्यवहार कलीसिया के पतित सदस्यों के प्रति वैसा अनुशासनात्मक व्यवहार करने का औचित्य प्रदान नहीं करता है।

मन्दिर के कार्यकर्ताओं के दशमांश का पुनर्निर्धारण (13:10-14)

[10]फिर मुझे मालूम हुआ कि लेवियों का भाग उन्हें नहीं दिया गया है; और इस कारण काम करनेवाले लेवीय और गवैये अपने अपने खेत को भाग गए हैं। [11]तब मैं ने हाकिमों को डाँटकर कहा, "परमेश्वर का भवन क्यों त्यागा गया है?" फिर मैं ने उनको इकट्ठा करके, एक एक को उसके स्थान पर नियुक्त किया। [12]तब से सब यहूदी अनाज, नये दाखमधु और टटके तेल के दशमांश भण्डारों में लाने लगे। [13]मैं ने भण्डारों के अधिकारी शेलेम्याह याजक और सादोक मुंशी को, और लेवियों में से पदायाह को, और उनके नीचे हानान को, जो मत्तन्याह का पोता और जक्कूर का पुत्र था, नियुक्त किया; वे तो विश्वासयोग्य गिने जाते थे, और अपने भाइयों के मध्य बाँटना उनका काम था। [14]हे मेरे परमेश्वर! मेरा यह काम मेरे हित के लिये स्मरण रख, और जो जो सुकर्म मैं ने अपने परमेश्वर के भवन और उसमें की आराधना के विषय किए हैं उन्हें मिटा न डाल।

नहेम्याह ने यहूदियों द्वारा मन्दिर के कार्यकर्ताओं को समर्थन देने में असफलता का समाधान किया।

आयत 10. *समस्या।* **लेवियों का भाग** (दशमांश), जिसके वे हकदार थे, उनको **नहीं** दिया जा रहा था। लोगों को दशमांश देने का निर्देश पहले ही दिया गया था लेकिन इसके बावजूद वे अपने उपज का दशमांश यहोवा को नहीं दे रहे थे (10:34-39)। इस समयावधि में, मलाकी भविष्यवक्ता ने भी यहूदियों को, व्यवस्था के अनुसार न देने के लिए उनकी भर्त्सना किया (मलाकी 3:8-10)।

स्वयं व अपने परिवार का पालन-पोषण करने के लिए, **गवैयों** के साथ, उन्होंने मन्दिर का **सेवा कार्य त्याग** दिया था। इब्रानी शब्द בָּרַח (*बारह्*) का हिन्दी अनुवाद **भाग गए** है, जिसका यथा अर्थ "भाग जाना" है। वे अपने-अपने खेतों में खेती-बाड़ी करने के लिए भाग गए थे। किस खेत में खेती करने के लिए लेवीय लोग चले गए थे? उनको खेती करने के लिए भूमि कहाँ से मिला? जब इस्राएलियों ने कनान पर विजय प्राप्त कर लिया था, तो लेवियों को भूमि के बजाय अड़तालीस नगरों का अधिकार दिया गया था। राज्य विभाजन के पश्चात और इस पर आक्रमणकारियों का विजय (सर्वप्रथम अश्शूर और उसके पश्चात बेबीलोन) और साथ ही यहूदियों का निर्वासन के कारण, नहेम्याह के दिनों तक प्रतिज्ञा की देश का मूल स्वरूप पहले जैसा नहीं रह गया था। इसलिए, लेवीय भी अन्य यहूदियों के समान जमींदार हो गए थे। यदि भूमि का मूल विभाजन ज्यों का त्यों ही क्यों न रहा हो, तौभी लेवियों को दी गई नगरों के आस-पास की भूमि पर खेती की जाती थी। चूँकि लोग उनका ठीक-ठीक समर्थन नहीं कर रहे थे, इसलिए उनको अपना पालन-पोषण स्वयं करना पड़ रहा था। उनके भाग जाने का परिणाम यह निकला कि मन्दिर का सेवा कार्य प्रभावित हो रहा था।

आयतें 11-13. *समाधान।* नहेम्याह ने चार प्रक्रिया अपनाते हुए इस समस्या का क्रमवार व पूर्णतया समाधान किया। (1) उसने मन्दिर के अधिकारियों को जो

पवित्र कार्य सम्पन्न कराने के लिए जिम्मेदार थे, उनकी **भर्त्सना** (ריב, *rîb*) किया या उनका "सामना किया" (13:11)। (2) उसने लेवियों एवं गवैयों को **उनके स्थान पर** पुनः **नियुक्त किया** (13:11)। (3) उसने पूरे **यहूदा** के निवासियों को मन्दिर के **भण्डारगृह** में **अनाज**, **दाखमधु और टटके तेल** लाने के लिए कहा (13:12)। (4) उसने याजकों एवं लेवियों में से कुछ **विश्वासयोग्य** लोगों को मन्दिर में लाए गए भेंट का हिसाब रखने के लिए नियुक्त किया और यह सुनिश्चित किया कि यह भेंट याजकों और लेवियों और **उनके भाइयों** को उचित रीति से मिले (13:13)।

जिन तीन व्यक्तियों को नहेम्याह ने इस कार्य के लिए नियुक्त किया वे दशमांश न मिलने के कारण सबसे अधिक प्रभावित थे: वे एक **याजक**, एक **शास्त्री** और एक **लेवीय** थे। ऐसा प्रतीत होता है कि चौथा व्यक्ति इन में से कोई भी नहीं था; लेकिन वास्तव में वह एक विश्वासयोग्य व्यक्ति था, जो इस समिति का निष्पक्ष व्यक्ति रहा होगा और जो दूसरों के भलाई का भली भांति न्याय कर सकता था।

आयत 14. कथा के इस भाग में, नहेम्याह ने इस संस्मरण में पाए जाने वाले चार प्रार्थनाओं में से प्रथम संक्षिप्त प्रार्थना का यहाँ समावेश किया है। हर एक प्रार्थना में उसने **परमेश्वर** से **स्मरण** रखने के लिए विनती किया है (13:14, 22, 29, 31; देखें 5:19; 6:14)। "याद रखने" के बारे में कहें तो यह कुछ बातों को स्मरण करना नहीं है बल्कि "याद रखने" का तात्पर्य किसी के मस्तिष्क में बसा खास तरीके से व्यवहार या कार्य करना है।[14] इनमें से तीन प्रार्थनाओं में, नहेम्याह ने कहा कि परमेश्वर उसको उसके अच्छे कार्य के लिए "याद रखे।" एक प्रार्थना में, उसने परमेश्वर से वाचा तोड़ने वालों को, जिनको वह चाहता था कि परमेश्वर दण्डित करे, "याद रखने" के लिए कहा।

नहेम्याह, 13:14 में प्रार्थना कर रहा था कि परमेश्वर मन्दिर के प्रति उसके कार्य देखे और परमेश्वर की स्मरण की पुस्तक में से वह उसके **सुकर्म मिटा न डाले।** बाइबल के कई अनुच्छेदों में परमेश्वर के पास इस प्रकार की पुस्तक होने का संदर्भ पाया जाता है (निर्गमन 32:32; लूका 10:20; प्रकाशितवाक्य 20:12; 21:27)। किडनर ने परमेश्वर के प्रति नहेम्याह का प्रेम, उसके उत्साह और उसके नम्र मन की सराहना की है। उन्होंने लिखा, "परमेश्वर से 'बहुत अच्छा' सुनना, सबसे निर्दोष और सबसे शुद्ध महत्वाकांक्षा है। इसके साथ ही, निवेदन नम्र भाव से उत्पन्न होता है, स्वार्थ भाव से नहीं, क्योंकि यह सहायता के लिए निवेदन है।"[15]

नहेम्याह की "याद रखने" वाली प्रार्थना, उसकी मुख्य प्राथमिकता को दर्शाती है। इस बात में उसकी कोई रूची नहीं था कि अन्य लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं या फिर "महान" व्यक्ति के रूप में उसकी गिनती की जाए। वह केवल इस बात से चिंतित था कि परमेश्वर उसके बारे में क्या सोचता है! सबसे रोचक बात यह है कि उसकी सबसे बड़ी चिंता कि परमेश्वर उसको "याद रखे" का परिणाम यह हुआ कि लगभग 2,400 वर्षों से भी अधिक समय तक वह परमेश्वर का जन और परमेश्वर के लोगों का नेतृत्व करने वाला के रूप में "याद" किया जाता रहा है।

विश्रामदिन मनाना लागू किया जाना (13:15-22)

15उन्हीं दिनों में मैं ने यहूदा में बहुतों को देखा जो विश्रामदिन को हौदों में दाख रौंदते, और पूलियों को ले आते, और गदहों पर लादते थे; वैसे ही वे दाखमधु, दाख, अंजीर और भाँति भाँति के बोझ विश्रामदिन को यरूशलेम में लाते थे; तब जिस दिन वे भोजनवस्तु बेचते थे, उसी दिन मैं ने उनको चिता दिया। 16फिर उसमें सोरी लोग रहकर मछली और भाँति भाँति का सौदा ले आकर, यहूदियों के हाथ यरूशलेम में विश्रामदिन को बेचा करते थे। 17तब मैं ने यहूदा के रईसों को डाँटकर कहा, "तुम लोग यह क्या बुराई करते हो, जो विश्रामदिन को अपवित्र करते हो? 18क्या तुम्हारे पुरखा ऐसा नहीं करते थे? और क्या हमारे परमेश्वर ने यह सब विपत्ति हम पर और इस नगर पर न डाली? तौभी तुम विश्रामदिन को अपवित्र करने से इस्राएल पर परमेश्वर का क्रोध और भी भड़काते जाते हो।" 19अतः जब विश्रामवार के पहले दिन को यरूशलेम के फाटकों के आसपास अन्धेरा होने लगा, तब मैं ने आज्ञा दी, कि उनके पल्ले बन्द किए जाएँ, और यह भी आज्ञा दी, कि वे विश्रामवार के पूरे होने तक खोले न जाएँ। तब मैं ने अपने कुछ सेवकों को फाटकों का अधिकारी ठहरा दिया, कि विश्रामवार को कोई बोझ भीतर आने न पाए। 20इसलिये व्यापारी और भाँति भाँति के सौदे बेचनेवाले यरूशलेम के बाहर दो एक बार ठहरे। 21तब मैं ने उनको चिताकर कहा, "तुम लोग शहरपनाह के सामने क्यों टिकते हो? यदि तुम फिर ऐसा करोगे तो मैं तुम पर हाथ बढ़ाऊँगा।" इसलिये उस समय से वे फिर विश्रामवार को नहीं आए। 22तब मैं ने लेवियों को आज्ञा दी कि अपने अपने को शुद्ध करके फाटकों की रखवाली करने के लिये आया करो, ताकि विश्रामदिन पवित्र माना जाए। हे मेरे परमेश्वर! मेरे हित के लिये यह भी स्मरण रख और अपनी बड़ी करुणा के अनुसार मुझ पर तरस खा।

अगला सुधार जिसे नहेम्याह ने प्रारंभ किया वह यहूदियों द्वारा विश्रामदिन को अपवित्र ठहराए जाने से संबंधित था। व्यवस्था कहता है, "तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना" (निर्गमन 20:8) और विश्रामदिन को पवित्र कैसे रखा जा सकता था, का विश्लेषण करता है: लोगों को विश्राम करना था और काम नहीं करना था। इस अनुच्छेद में जो मामला प्रस्तुत किया गया है, उससे यह पता चलता है कि लोगों ने व्यापारिक कामों में संलग्न होकर व्यवस्था का उल्लंघन किया था।

आयतें 15, 16. *समस्या।* नहेम्याह ने परिस्थिति का आंकलन किया। **विश्रामदिन** में कुछ यहूदी लोग कुछ उत्पादन कर रहे थे (**हौदों में दाख रौंद रहे थे**), आयत निर्यात कर रहे थे (अनाज, **दाखमधु, दाख** और **अंजीर** इत्यादि ढो रहे थे), और इनको **यरूशलेम** में बेच रहे थे (13:15)। यदि वे यह कहकर बहाना बनाने का प्रयास करते कि वे विश्रामदिन में बुआई या कटाई नहीं कर रहे थे और इस प्रकार व्यवस्था नहीं तोड़ रहे थे, तो नहेम्याह ने सीधे उनके मुँह पर कहा कि

वे गलत थे।

इसके साथ ही, **सोरी** लोग, ताजी या सुखी मछली, **विश्रामदिन में** बेच रहे थे (13:16; देखें टिप्पणी 3:3)। यहूदियों को पता था कि व्यवस्था अन्य जातियों पर लागू नहीं होता है तो उन्होंने सोरी लोगों द्वारा विश्रामदिन में वस्तुएं बेचने को उचित ठहराने का प्रयास किया होगा; लेकिन नहेम्याह को समझ आ गया था कि यदि कोई सोर से **यरूशलेम में** आकर वस्तुएं बेचता है, तो यहूदी लोग उसको खरीदते थे। यदि परमेश्वर के लोग इस प्रकार के व्यापार में संलग्न थे तो वे काम कर रहे थे और विश्रामदिन की व्यवस्था तोड़ रहे थे (देखें 10:31)।

आयतें 17-22. *समाधान।* नहेम्याह ने इस समस्या का समाधान तीन चरणों में किया। सर्वप्रथम, उसने प्रजा के मुख्य-मुख्य पुरुषों को उनके जिम्मेदारी के बारे में सिखाया और पुनः सिखाया। उसने उन्हें इस आशय से "समझाया" (13:15) और **डाँटकर कहा** कि वे अपने कर्तव्य को पूरा करने में असफल रहे हैं। उसने उन्हें इस बात से निरुत्तर करने का प्रयास किया कि **विश्रामदिन को** उन्हें इन व्यावसायिक गतिविधियों को नहीं होने देना चाहिए था (13:17)। उसने इस आशा के साथ प्रजा के इन मुख्य-मुख्य पुरुषों को कठोरता से कहा कि भविष्य में इस प्रकार का काम दोबारा कभी नहीं होना चाहिए। उसने उन्हें तर्क दे देकर समझाया कि क्यों उन्हें विश्रामदिन में व्यापार नहीं होने देना चाहिए था: भूतकाल में परमेश्वर ने इस प्रकार की अपराध के लिए देश को नष्ट करके उनको पराये देश के हाथों सौंपकर उन्हें दण्डित किया था। निश्चित रूप से प्रजा के मुख्य-मुख्य पुरुष इतिहास से अवगत थे, **फिर भी**, नहेम्याह ने उन्हें समझाया, वे **विश्रामदिन को अपवित्र करने से इस्राएल पर परमेश्वर का क्रोध और भी भड़काते जा रहे** थे (13:18)।

दूसरी बात, उसने **विश्रामदिन** में खरीदने और बेचने की प्रथा को समाप्त करने की दिशा की ओर कड़ा कदम उठाया। उसने विश्रामदिन में नगर के **फाटक** बंद रखने का आदेश दिया (13:19)। विश्रामवार की संध्या (शुक्रवार) से लेकर शनिवार की संध्या तक नगर का फाटक बंद होने के कारण **व्यापारी** नगर में अपना सामान बेचने के लिए नहीं ला सकते थे।

तीसरी बात, उसने अपने आरंभिक गतिविधि का पुनरावलोकन करके यह सुनिश्चित किया कि वर्जित काम पूर्णतया समाप्त हो जाएगा। जब उसने देखा कि अन्य जाति **व्यापारी** इस आशा से नगर के फाटक के **बाहर** डेरा डाले हुए हैं (13:20) कि यहूदी लोग बाहर आकर उनसे सामान खरीदेंगे (चूँकि वे यहूदियों के यहाँ जाकर बेच नहीं सकते थे), तो उसने उन्हें वहाँ से जाने के लिए कहा।

नहेम्याह ने उन्हें **चेताया** (עוּד, *'ud*) या उनके विरुद्ध गवाही दी। उसने उन्हें धमकाया कि यदि वे वहाँ से नहीं गए तो वह उनके विरुद्ध सैन्य बल प्रयोग करेगा। उसके पश्चात **उस समय से वे फिर विश्रामवार को नहीं आए** (13:21)। उसने अपने कुछ **सेवकों** (13:19) को नगर की फाटक पर ठहराया, और तब उसने **विश्रामदिन में लेवियों** को इस आशय से **फाटकों** पर ठहराया (13:22a) कि ये लोग पहले के फाटक के रखवाले करने वालों से अधिक संवेदनशील होंगे और यह

सुनिश्चित करेंगे कि वे व्यापारियों को उस दिन नगर से बाहर रखेंगे।

नहेम्याह ने एक बार फिर परमेश्वर से उसे **स्मरण** रखने के लिए विनती किया, इस बार उसने यह विनती किया कि वह अपनी बड़ी करुणा के कारण उस पर तरस खाए। वह यह विनती अपनी अच्छाई के कारण नहीं कर रहा था बल्कि परमेश्वर की **बड़ी करुणा** और **तरस खाने** के आधार पर उससे तरस खाने के लिए कर रहा था। नहेम्याह को पता था कि उसका उद्धार परमेश्वर की अनुग्रह पर ही आधारित है!

अंतरजातीय विवाह वर्जित था (13:23-29)

23फिर उन्हीं दिनों में मुझ को ऐसे यहूदी दिखाई पड़े जिन्होंने अशदोदी, अम्मोनी और मोआबी स्त्रियाँ ब्याह ली थीं। 24उनके बच्चों की आधी बोली अशदोदी थी, और वे यहूदी बोली न बोल सकते थे, दोनों जाति की बोली बोलते थे। 25तब मैं ने उनको डाँटा और कोसा, और उनमें से कुछ को पिटवा दिया और उनके बाल नुचवाए; और उनको परमेश्वर की यह शपथ खिलाई, "हम अपनी बेटियाँ उनके बेटों के साथ ब्याह में न देंगे और न अपने लिये या अपने बेटों के लिये उनकी बेटियाँ ब्याह में लेंगे। 26क्या इस्राएल का राजा सुलैमान इसी प्रकार के पाप में न फँसा था? बहुतेरी जातियों में उसके तुल्य कोई राजा नहीं हुआ, और वह अपने परमेश्वर का प्रिय भी था, और परमेश्वर ने उसे सारे इस्राएल के ऊपर राजा नियुक्त किया; परन्तु उसको भी अन्यजाति स्त्रियों ने पाप में फँसाया। 27तो क्या हम तुम्हारी सुनकर, ऐसी बड़ी बुराई करें कि अन्यजाति की स्त्रियों से विवाह कर के अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप करें?" 28एल्याशीब महायाजक के पुत्र योयादा का एक पुत्र, होरोनी सम्बल्लत का दामाद था, इसलिये मैं ने उसको अपने पास से भगा दिया। 29हे मेरे परमेश्वर, उनको स्मरण रख, क्योंकि उन्होंने याजकपद और याजकों और लेवियों की वाचा को अशुद्ध किया है।

एक और समस्या जिसका नहेम्याह ने समाधान किया था वह मूर्तिपूजक स्त्रियों से विवाह से संबंधित था।

आयतें 23, 24. *समस्या।* नहेम्याह को पता चला कि कुछ यहूदियों ने विदेशी स्त्रियों से विवाह कर लिया था। उसने **अशदोदी, अम्मोनी और मोआबी** स्त्रियों का विवरण किया है, लेकिन इसकी भी संभावना है कि यहूदा के पुरुषों ने अन्य देशों की स्त्रियों से भी विवाह कर लिया होगा (13:23)।

इस अंर्तजातिय विवाह से उत्पन्न हुए कई **बच्चे अशदोदी** भाषा बोलते थे।[16] पुराने नियम में, अशदोद पलिश्तियों का एक मुख्य नगर था, लेकिन यहाँ इसका प्रयोग यहूदा की पश्चिम में स्थित सम्पूर्ण फारसी प्रांत को संदर्भित करता है (देखें 4:7)। इस अंतरजातिय विवाह से उत्पन्न हुए बच्चे अपनी माँ की भाषा ही बोलते थे, वे **यहूदी बोली** नहीं बोल सकते थे (13:24; देखें 2 राजा 18:26, 28)। दूसरे शब्दों में, वे इब्रानी भाषा नहीं जानते थे।

विद्यार्थियों के लिए आज नहेम्याह की इस चिंता को समझना कठिन हो सकता है। यहूदियों (या इस्राएलियों) के धर्म की पहचान एक अलग किए गए जाति (परमेश्वर के लोग) के रूप में किया गया है, और उनकी पहचान उनके भाषा से जुड़ा है। यदि उन्होंने अपनी पहचान खो दी थी और अलग-अलग जाति व भाषा के बीच अव्यवस्थित समूह बन गए थे, तो उनका धर्म भी निश्चय ही विभिन्न प्रचलित धर्मों का मिश्रण बन गया होगा। डी. जे. ए. क्लाइंस के अनुसार नहेम्याह ने, "अंतरजातिय विवाह को समुदाय की अस्तित्व के लिए खतरा (देखें आयत 18) और परमेश्वर के प्रति अनिष्ठा (आयत 27)" के रूप में देखा।[17] निश्चय, परदेशियों (अन्य धर्मों के मानने वालों) से विवाह करने से एक खतरा उत्पन्न हो जाता है!

आयतें 25-28. *समाधान।* नहेम्याह ने इस दुविधा का समाधान कड़ाई से किया। उसने अपराध करने वालों **को डाँटा**। इब्रानी शब्द ריב (*रीब*) एक प्रकार का न्यायालय कक्ष का दृश्य प्रस्तुत करता है। नहेम्याह ने अपराध करने वालों को, संभवतः अन्य यहूदी मुख्य पुरुषों के समक्ष, क्रमवार एक-एक करके अपने पास बुलाया। उसने उन पर उनके गलत कार्यों का दोषारोपण किया और उन पर लगे दोष को प्रमाणित भी किया। हो सकता है कि उसने उन्हें इस आरोप के प्रति प्रत्युत्तर देने का अवसर प्रदान किया होगा या कम से कम अपराध स्वीकार करने का अवसर भी प्रदान किया होगा।

उसने **उन्हें कोसा**, अर्थात् उसने उनको उस शपथ के बारे में स्मरण दिलाया जो उन्होंने परमेश्वर के साथ बांधा था। उसने परमेश्वर को उन्हें श्राप देने के लिए कहा क्योंकि उन्होंने अपनी पवित्र शपथ तोड़ दी थी। यदि वे अपने शपथ पर बने नहीं रहते हैं तो उनका शपथ परमेश्वर को उन्हें श्राप देने के लिए विवश करेगा (देखें 10:29)।

उसने **उनमें से कुछ को पिटवा दिया और उनके बाल नुचवाए**; संभवतः उसने अपने कुछ सेवकों को उन्हें दण्डित करने के लिए कहा होगा। निस्संदेह, उसने यह कठोर कदम तब उठाया जब उसने जिन लोगों का "सामना किया" था और जिनको उसने "कोसा" था, ने किसी भी प्रकार का पछतावा नहीं जताया और उन्होंने यहाँ तक उससे विवाद किया कि शर्मिंदगी उठाने का कोई कारण नहीं है। ऐसे स्थिति में, उसने अधिपति होने का अधिकार प्रयोग करते हुए उन पर बल प्रयोग किया कि वह उनको उनके घुटनों में ला आए और उनके अपराध की गम्भीरता उन्हें समझाए।

नहेम्याह ने यह कठोर कदम अपराध करने वालों को **शपथ** दिलाने के लिए उठाया कि अब से लेकर वे मूसा की व्यवस्था का अनुपालन करेंगे; अर्थात् उसने उन्हें यह प्रतिज्ञा लेने के लिए कहा कि वे परदेशी स्त्री से विवाह नहीं करेंगे या अपनी **बेटियों** को परदेशियों को नहीं देंगे (13:25)। संभवतः वह यह चाहता था कि दूसरे लोग इनके दण्ड से पाठ सीखें।

नहेम्याह ने संभवतः जो किया उससे महत्वपूर्ण बात यह है जो उसने नहीं किया। उसने एज्रा के समान यहूदी पुरुषों को उनकी परदेशी पत्नियों को तलाक देने के लिए नहीं कहा। ऐसा उसने क्यों नहीं किया? (1) कुछ लोगों ने अनुमान

लगाया है कि एज्रा के तरीके ने कार्य नहीं किया था (चूँकि समस्या दोबारा आ गई थी), इसलिए उसने परिस्थिति से निपटने का दूसरा तरीका अपनाया। (2) दूसरी संभावना यह है कि यद्यपि समस्या बनी हुई थी, लेकिन यह पहले के समान प्रबल नहीं थी[18] और इसलिए उसको पहले के समान कठोर कदम उठाने की आवश्यकता नहीं थी। (3) एक और संभावना यह है कि एक साधारण व्यक्ति होने के कारण, नहेम्याह का अधिकार एज्रा के समान नहीं था, इसलिए वह यहूदी पुरुषों को अपनी पत्नियों को तलाक देने के लिए नहीं कह पा रहा था। (4) नहेम्याह ने यह अपेक्षा की होगी कि जो कदम उसने उठाया था उसका परिणाम वही होगा जिसकी कार्यवाही एज्रा ने की थी। संभवतः अपराधियों को यह समझ आ गया था कि यदि उन्होंने अपनी पत्नियों को तलाक देकर परिस्थितियों पर सुधार नहीं किया तो वे निरंतर पीटे जाने के खतरे से जूझते रहेंगे। फिर भी, चूँकि व्यवस्था में इस्राएलियों को अपनी परदेशी पत्नियों को तलाक देने का कोई प्रावधान नहीं है, तो नहेम्याह को उनको ऐसा करने के लिए विवश करके व्यवस्था तोड़ने का दोषी नहीं ठहराया जा सकता है।

नहेम्याह ने यहूदियों के पापों को ठीक करने के लिए शारीरिक प्रताड़ना और वैधानिक तरीका दोहराकर लोगों को अंतरजातिय विवाह की सच्चाई के बारे में बार-बार शिक्षा देकर समझाया। इससे पहले की मामले में, परिस्थिति को ठीक करने के लिए शारीरिक उत्पीड़न का विश्लेषण करने से पहले उसने आपत्ति जताई; इस मामले में, उसने उन्हें बताने से पहले इसकी शारीरिक उत्पीड़न की रूपरेखा तैयार किया।

नहेम्याह का विदेशियों से विवाह करने के विषय पर संक्षिप्त संदेश का उदाहरण **सुलैमान** था। यद्यपि सुलैमान **इस्राएल** का एक महान **राजा** था और **परमेश्वर** ने उसको बड़ी आशीष दी थी, फिर भी उसके **विदेशी** पत्नियों ने उससे **पाप कराया** (13:26; देखें 1 राजा 11:4-8)। नहेम्याह ने अपना संदेश **अन्यजाति की स्त्रियों से विवाह** की तुलना **पाप** से करके साथ समाप्त किया (13:27)।

अंतर-जातीय विवाह की समस्या का उदाहरण और इसका समाधान करने के लिए उठाए गए कदम के बाद, नहेम्याह ने एक विशिष्ट मामले का उद्धहरण प्रस्तुत किया। **एल्याशीब महायाजक के पुत्र योयादा के एक पुत्र** ने **सम्बल्लत** की बेटी से विवाह किया, जो सामरिया का हाकिम और यहूदियों के शत्रुओं में से एक प्रमुख शत्रु था (2:10, 19)। नहेम्याह ने परिस्थिति का सामना कठोरता से किया। उसने कहा, **इसलिये मैं ने उसको अपने पास से भगा दिया** (13:28)।[19]

आयत 29. नहेम्याह ने परमेश्वर से यह कहकर विनती की कि **हे मेरे परमेश्वर, उनको स्मरण रख**। स्वयं अपने व्यवहार पर जोर देने के बजाय, वह परमेश्वर से अपराध करने वालों को "स्मरण" रखने और उनके कामों के अनुसार उनको दण्डित करने के लिए विनती कर रहा था। ऐसा करके वह **याजकों और लेवियों की वाचा** के प्रति गहरी चिंता व्यक्त कर रहा था।

सारांश और प्रार्थना (13:30, 31)

[30]इस प्रकार मैं ने उनको सब अन्यजातियों से शुद्ध किया, और एक एक याजक और लेवीय की बारी और काम ठहरा दिया। [31]फिर मैं ने लकड़ी की भेंट ले आने के विशेष समय ठहरा दिए, और पहली पहली उपज के देने का प्रबन्ध भी किया। हे मेरे परमेश्वर! मेरे हित के लिये मुझे स्मरण रख।

नहेम्याह ने अपने सुधार कार्य का वृतांत, सारांश वक्तव्य व प्रार्थना के साथ समाप्त किया।

आयतें 30, 31. यहूदियों को अन्यजातियों से शुद्ध करने का विचार (13:30) का संदर्भ स्पष्ट रूप से नहेम्याह द्वारा अंतरजातीय विवाह का विरोध था। यह इस अध्याय में वर्णित नहेम्याह द्वारा किए गए सभी सुधार कार्यों पर भी लागू होता है। मन्दिर को अशुद्ध करना, दशमांश न देना, और विश्रामदिन की विधि इत्यादि तोड़ना, परमेश्वर के विशिष्ट लोगों के बीच (असामान्य या अज्ञात के संदर्भ में) "बाहरी" था। इसके साथ ही नहेम्याह ने कहा कि उसने कई सकारात्मक कदम उठाए: उसने **एक एक याजक और लेवीय की बारी और काम ठहरा दिया** (देखें 13:13), होमबलि के **लिए** आवश्यक लकड़ी की भेंट **का प्रबंध किया** (देखें 10:34), और व्यवस्था के प्रावधान के अनुसार याजकों के पास पहली उपज लाने का प्रबंध भी किया (देखें 10:35, 36)। वह यह सुनिश्चित करना चाहता था कि मन्दिर का काम सुचारु रूप से चलता रहे। इन कामों के लिए उसने परमेश्वर द्वारा **उसके हित के लिए** उसे स्मरण रखे जाने के लिए विनती की (13:31)। नहेम्याह की कथा, एज्रा और इतिहास में पाए जाने वाला सारांश वक्तव्य मन्दिर और इसकी सेवाएं चलती रहें के साथ समाप्त होता है।

कोई यह प्रश्न उठा सकता है कि लेखक ने क्यों इस पुस्तक के अंतिम भाग को यहाँ सम्मिलित किया है। व्यवस्था पढ़े जाने का वृतांत और इसके परिणामस्वरूप जो बड़ा सुधार आया, यही यहूदियों के प्रतिज्ञा के देश में पुनःस्थापन का पर्याप्त सारांश होता। संभवतः वह अपने पाठकों को यह स्मरण दिलाना चाहता था कि स्वधर्म त्याग उनके लिए एक निरंतर खतरा बना हुआ था। जिस तरह यहूदियों के पुरखा निरंतर परमेश्वर को पीठ दिखाते रहे, वैसे ही नहेम्याह के जाते ही उन्होंने भी परमेश्वर को पीठ दिखा दी थी। चूँकि स्वधर्म त्याग का खतरा उनके चारों ओर मंडरा रहा था, तो इस संदर्भ में दो आदेश यहाँ अनिवार्य थे: (1) स्वधर्म त्याग रोकने के लिए निरंतर सतर्कता बरतना आवश्यक है और (2) जब यह होता है तो सुधार कार्य अनिवार्य हो जाता है।[20] प्रथम पाठकों ने यह सीखा होगा कि परमेश्वर के सत्य धर्म का सुधार कार्य कभी भी पूरी तरह से नहीं समाप्त हुआ था; यह आवश्यकतानुसार निरंतर चलता रहता है।

अनुप्रयोग

प्रभावकारी नेतृत्व: परमेश्वर केन्द्रित जीवन (अध्याय 13)

जो गुण किसी व्यक्ति को कलीसिया की नेतृत्व में प्रभावशाली बनाता है वह उसे किसी भी परिस्थिति में प्रभावशाली बना सकता है। यद्यपि, एक प्रभावशाली मसीही अगुवे के पास एक विशिष्ट गुण होता है जो अन्य लोगों में नहीं पाया जाता है: उसका जीवन यहोवा परमेश्वर पर केन्द्रित रहता है। जिनका जीवन परमेश्वर पर केन्द्रित नहीं है उसको कलीसिया में अगुवे का कार्य नहीं करना चाहिए।

परमेश्वर के अगुवे सदैव उस पर निर्भर रहते हैं। अब्राहम ने परमेश्वर का अनुकरण इसलिए किया, क्योंकि उसको उस पर भरोसा था (इब्रा. 11:8-12)। परमेश्वर पर भरोसा रखने के कारण ही मूसा ने मिस्र छोड़ा (इब्रा. 11:24-29); फिर वह इस्राएलियों को प्रतिज्ञा के देश में ले जाते हुए पूरी तरह परमेश्वर पर ही निर्भर रहा। जब यहोशू इस्राएलियों को यरीहो के चारों ओर ले जा रहा था तो उसने परमेश्वर पर विश्वास रखा (इब्रा. 11:30)। अपने जीवन के अंतिम क्षणों में जब उसने लोगों से कहा कि वे किस ईश्वर की सेवा करना चाहते हैं तो उसने कहा, "परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूँगा" (यहोशू 24:15)। राजाज्ञा के विरुद्ध दानिय्येल ने परमेश्वर से "दिन में तीन बार प्रार्थना की" (दानिय्येल 6:10)। यीशु, परमेश्वर के पुत्र ने कहा कि वह अपने पिता की इच्छा पूरी करने आया है (यूहन्ना 4:34; 5:30; 6:38-40), और उसने निरंतर परमेश्वर से प्रार्थना किया। परमेश्वर ने पौलुस को जहाँ भी जाने के लिए निर्देशित किया, वह वहाँ गया और मसीह ने जो संदेश उसे दिया था उसका प्रचार किया और यह भी अंगीकार किया कि अब वह जीवित न रहा, परंतु मसीह उसमें जीवित है (गला. 2:20)।

नये नियम के समय में कलीसिया के अगुवों से ऐसे व्यक्ति होने की अपेक्षा की जाती थी जो परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहें (प्रेरितों. 6:3; 1 तीमु. 3:2, 8; 2 तीमु. 2:2; तीतुस 1:6)। पुराने और नये नियम में परमेश्वर के लोगों के महान अगुवे, सर्वप्रथम परमेश्वर के महान लोग थे। उनका जीवन परमेश्वर पर केन्द्रित था।

नहेम्याह ने इस गुण को कई तरह से प्रदर्शित किया। उसका उदाहरण मसीही अगुवों को परमेश्वर को उनके जीवन के केन्द्र में बनाए रखने के लिए चुनौती देता है।

नहेम्याह ने परमेश्वर की व्यवस्था से प्रेम रखा। व्यवस्था के प्रति उसका प्रेम प्रकट है क्योंकि उसने उसको पढ़े जाने के लिए कहा और परमेश्वर के लोगों को उसका विश्लेषण कराया जिससे यहूदियों में एक बड़ा सुधारवादी आन्दोलन प्रारंभ हो गया।

मसीही अगुवों को परमेश्वर के वचन, बाइबल, को इतना प्रेम करना है कि वह पढ़ी जाए, उसका अध्ययन किया जाए ताकि वे स्वयं इसे समझें और यह सुनिश्चित

करें कि जिन लोगों की वे अगुवाई करते हैं उनको यह पढ़कर सुनाया जाए और सिखाया जाए। कलीसिया के अगुवों के शब्दों में दम तो होना चाहिए लेकिन परमेश्वर के वचन को सर्वोपरि समझा जाना चाहिए।

परमेश्वर के भवन और परमेश्वर के लोगों से नहेम्याह प्रेम करता था। नहेम्याह की पुस्तक, परमेश्वर के भवन, मन्दिर के प्रति नहेम्याह का प्रेम और उसके प्रति चिंता का पर्याप्त प्रमाण है। वह मन्दिर से इतना प्रेम करता था कि उसने उस व्यवस्था को लागू कराया जो मन्दिर की सेवा जारी रखने और यहाँ सेवा करने वालों को उनकी मजदूरी मिले, से संबंधित थी।

नहेम्याह, परमेश्वर के लोगों से इतना प्रेम करते थे कि उसको उनकी सुरक्षा की चिंता थी। जब उसने सुना कि यरूशलेम की शहरपनाह टूटी पड़ी है तो वह अति व्यथित हुआ और उसने वहाँ जाकर शहरपनाह का पुनर्निर्माण करने की अनुमति मांगी। वह लोगों से इतना प्रेम करता था कि उसने उनको परमेश्वर के साथ उचित संबंध स्थापित करने के लिए उनकी अगुवाई की, इसलिए उसने वाचा का नवीनीकरण करने के लिए, जो उनके पुरखाओं ने यहोवा के साथ बांधा था, का पुनः आयोजन किया। वह उनसे इतना प्रेम करता था कि उसने उनको उस वाचा को थामे रहने के लिए जिम्मेदार ठहराया। जब वह शूशन प्रवास से लौटा तो उसने पाया कि उन्होंने वाचा तोड़ दी है, तो उसने उन्हें पुनः समर्पण करने के लिए बुलाया। वह उनसे इतना प्रेम करता था कि जो भी पश्चाताप नहीं करना चाहते थे, उसने उनको भी अनुशासित किया।

आज कलीसिया के अगुवों को भी परमेश्वर की कलीसिया से प्रेम करना चाहिए (इफि. 5:25; 1 तीमु. 3:15)। एक अवधारणा के रूप में केवल कलीसिया से ही प्रेम नहीं करना है; उनको कभी-कभी कलीसिया के उन लोगों को भी प्रेम करना है जिनको प्रेम नहीं किया जा सकता है। उनको भाइयों से इतना प्रेम करना है कि उनको (उदाहरण के लिए झूठे शिक्षकों से) सुरक्षा प्रदान की जा सके। उनका प्रेम यह सुनिश्चित करे कि उनके संगी मसीही परमेश्वर के साथ उचित संबंध बनाए हुए हैं और जो व्यवस्था तोड़ते हैं उनको वे सुधारें। जो संगति त्यागकर अपश्चातापी हो गए हैं उनके प्रति वास्तविक चिंता ही उनको अनुशासित करने का उन्हें साहस प्रदान करेगी। पथभ्रष्ट मसीहियों को सुधारने के लिए उठाए गए कदमों में प्राचीनों के प्रेम का प्रमाण दिखाई देना चाहिए न कि जो सुधारे जा रहे हैं उनके प्रति द्वेष की भावना (देखें इब्रा. 12:4-11)। कलीसिया के अगुवों को दूसरों के लिए अपने जीवन में परमेश्वर के राज्य, कलीसिया, को प्रथम स्थान देने के द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए (मत्ती 6:33)।

नहेम्याह परमेश्वर से प्रेम करता था। जो कुछ वह करता था उसमें उसका परमेश्वर के प्रति प्रेम दिखाई देता था। यह उसके व्यक्तिगत जीवन, विशेषकर उसकी प्रार्थना में प्रकट है। जब उसने शूशन में रहते हुए यहूदा की समस्या के बारे में सुना तो उसने प्रार्थना की; जब उसने राजा का सामना किया और स्वदेश लौटने के लिए उससे विनती की तो उसने प्रार्थना की; शहरपनाह पर काम करते समय जब उसका विरोध किया गया तो उसने प्रार्थना की और जब वह दोबारा यरूशलेम

लौटकर सुधार के काम में संलग्न हुआ तो उसने प्रार्थना की। उसने विनती की कि परमेश्वर उसको उसके अच्छे काम के लिए "स्मरण" रखे और उसके प्रति परमेश्वर कृपालु हो। इसके साथ ही उसने यह प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके शत्रुओं को और जो हानि उन्होंने उसको पहुँचाई थी, वह "स्मरण" रखे। दूसरे शब्दों में, जो कुछ हुआ था उसका श्रेय उसने परमेश्वर को दिया। परमेश्वर के लिए उसके प्रेम के कारण, उसके जीवन में जो कुछ हुआ था, उसका न्यायी और रक्षक होने के लिए उसने परमेश्वर पर भरोसा रखा। ये सारे उदाहरण यह दर्शाते हैं कि नहेम्याह प्रार्थना करने वाला व्यक्ति था, जो निरंतर प्रार्थना में लगा रहा।

आज मसीही अगुवों को उसके उदाहरणों का अनुकरण करना चाहिए। उनको यह समझना चाहिए कि यद्यपि उनको अपना कौशल विकसित करना है, बुद्धिमानी से व्यवहार करना है, और धर्मी जीवन व्यतीत करना है, लेकिन इन सब का परिणाम उनके परिश्रम का फल नहीं है। प्रभावकारी मसीही अगुवे जो सचमुच परमेश्वर से प्रेम करते हैं वे निरंतर प्रार्थना करेंगे और उनकी यह अपेक्षा होगी कि परमेश्वर उनकी प्रार्थना सुने और अपनी इच्छा के अनुसार उनकी प्रार्थना का उत्तर दे।

उपसंहार। मसीह के लिए प्रभावकारी अगुवा होने का क्या अर्थ है? एक कलीसिया का प्रभावकारी अगुवा परमेश्वर को समर्पित होता है और उसकी प्राथमिक चिंता परमेश्वर के लोगों का भला चाहना है। वह कलीसिया के सदस्यों को मसीह के लिए उनके वरदानों का प्रयोग करने में अगुवाई करता है - कि वे अपना नाम कमाने के बजाय परमेश्वर की महिमा के लिए ऐसा करें! ऐसा अगुवा परमेश्वर पर विश्वास करता है और जो वह प्राप्त करता है, वह परमेश्वर से और परमेश्वर के लिए होता है।

कलीसिया के अगुवों के लिए, प्रभावकारी अगुवेपन का यह अंतिम पाठ सबसे महत्वपूर्ण है। जब तक कोई परमेश्वर केन्द्रित जीवन नहीं जीता है, तो जो कुछ वह परमेश्वर के लिए करता है वह व्यर्थ होता है। लेकिन, जिसका जीवन परमेश्वर पर केन्द्रित है तो वह परमेश्वर की सहायता से उन सब बातों को करने की अपेक्षा कर सकता है जो वह उससे कराना चाहता है (फिलि. 4:13)। परमेश्वर "अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है," कर सकता है (इफि. 3:20; NKJV)।

"मेरा स्मरण रख" (13:31)

यह पुस्तक नहेम्याह की इस प्रार्थना के साथ समाप्त होती है: "हे मेरे परमेश्वर! मेरे हित के लिये मुझे स्मरण रख" (13:31)। यह वचन हमें दो प्रश्न पूछने के लिए प्रेरितों. करता हैं जिस पर हर व्यक्ति को ध्यान देना चाहिए।

1. "मैं कैसा चाहता हूँ कि लोग मुझे स्मरण करें?" लोग अलग-अलग कारणों से स्मरण किए जाते हैं: कुछ उनके भयानक अपराधों के लिए; कुछ उनकी नीचता और क्रूरता के लिए; और कुछ उनकी गलतियों के लिए। बहुत से लोग चाहेंगे कि लोग उनको उनके सफल व्यवसाय या आर्थिक सम्पन्नता, उनकी कला या मनोरंजन

के क्षेत्र में योगदान, या खेलों में सफलता के लिए स्मरण करें। वहीं अन्य लोग बड़े राजनीतिज्ञ या राजनेता या सिपाही के रूप में स्मरण किया जाना पसंद करेंगे। कितने लोग ऐसे होंगे जो उनके "अच्छे काम" के लिए स्मरण किया जाना पसंद करेंगे? इस प्रकार के गुणों वाले कुछ लोगों को स्मरण करने में हमें प्रसन्नता होगी: नम्र संतों के रूप में जिनको कभी ख्याति या सम्पत्ति प्राप्त नहीं हुई लेकिन उन्होंने गुमनामी में जीवन बिताकर, मसीह के लिए काम किया और लोगों की सेवा की। क्या ऐसा हो सकता है कि हम इस प्रकार के व्यक्ति के रूप में स्मरण किए जाएं!

2. "किसके द्वारा मैं स्मरण किया जाना पसंद करूँगा?" नहेम्याह इस बात के लिए चिंतित था कि परमेश्वर उसको स्मरण रखे। यह अच्छी बात है कि हम अपने मित्र एवं सगे संबंधियों द्वारा स्मरण किए जाएं, लेकिन इससे बढ़कर बात यह है कि क्या हम परमेश्वर द्वारा स्मरण किए जाएंगे। यदि हम परमेश्वर द्वारा हमारे भले कामों के लिए स्मरण किए जाते हैं तो यह "परमेश्वर के हॉल आफ फ़ेम" में स्थान मिलने जैसा है; हमारा नाम जीवन की पुस्तक में लिखा जाएगा (देखें प्रका. 21:27) और धन्य लोगों के अनंत विश्राम में हमारा स्वागत् होगा।

समाप्ति नोट्स

[1]ए. ई. कनडल, "नहेम्याह," में *द न्यू बाइबल कॉमेन्ट्री: रिवाइज़्ड*, संपादक गथ्री एण्ड जे. ए. मोटयेर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1970), 410. [2]कीयथ एन. शोविल्ले ने लिखा, "'उस दिन' ... एक अनिश्चित कालानुक्रमिक चिन्ह है" (कीयथ एन. शोविल्ले, *एज्रा-नहेम्याह*, द कॉलेज प्रैस NIV कॉमेंट्री [जोपलिन, मिसौरी: कॉलेज प्रैस पबलिशिंग को., 2001], 255)। यही अभिव्यक्ति 12:44 में भी आती है। [3]जेकब एम. मायर्स, *एज्रा, नहेम्याह*, द ऐंकर बाइबल, वोल. 14 (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे & कंपनी, 1965), 207. [4]पौल ए. स्टीवर्ट, *नहेम्याह: द इन्वॉल्व्ड लेमैन* (ग्लेनडेल, कैलिफोर्निया: गौस्पल लाईट पब्लिकेशन्स, 1974), 132. रूबेन रैट्ज़लैफ द्वारा एक कम संभावित दृष्टिकोण व्यक्त किया गया, उन्होंने 13:1-3 में व्यवस्था के पढ़े जाने को शहरपनाह के समर्पण के साथ जोड़ा, किन्तु कहा कि समर्पण समारोह नहेम्याह के दोबारा लौटने तक नहीं हुआ, शहरपनाह के पूर्ण होने के लगभग बारह वर्ष बाद। (रूबेन रैट्ज़लैफ एण्ड पौल टी. बटलर, *एज्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ [जोपलिन, मिसौरी: कॉलेज प्रैस, 1979], 242.) [5]डेरेक किडनर, *एज्रा एण्ड नहेम्याह*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रैस, 1979), 128. [6]शोविल्ले, 257. [7]जौन व्हाईट, *एक्सेलेंस इन लीडरशिप: रीचिंग गोल्स विद प्रेयर्स, करेज & डिटरमिनेशन* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1986), 122. [8]जोहाना डब्ल्यू. एच. वैन विक-बोस, *एज्रा, नहेम्याह, एण्ड एस्तेर*, वेस्टमिनिस्टर बाइबल कम्पैनियन (लुईवेल्ले: वेस्टमिनिस्टर जौन नौक्स प्रैस, 1998), 95. [9]नहेम्याह 13:4-31 "नहेम्याह मेमौयार्स" का अंतिम वॉल्. है। [10]एच. जी. एम. विलियमसन, *एज्रा, नहेम्याह*, वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 16 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1985), 387. फारस के राजा कुस्रू को एज्रा 5:13 में तथा सायरस सिलिंडर में "किंग ऑफ बैबिलौन" कहा गया है। प्राचीन दस्तावेजों में फारस के राजा दारा को भी "द किंग ऑफ बैबिलौन" कहा गया है। देखें थियोफाइल जे. मीक, ट्रांस., "मेसोपोटामियन लीगल डॉक्यूमेंट्स: नियो-बेबिलोनियन," और ए. लियो ओपेनहाइम, ट्रांस., "सायरस [सिलिंडर]," में *एन्शियंट नियर ईस्टर्न टेक्स्ट्स: रिलेटिंग टू द ओल्ड टेस्टामेंट*, 3ड एड., एड. जेम्स बी. प्रिट्चर्ड (प्रिंसटन, एन.जे.: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रैस, 1969), 221, 316.

[11]वैन विक-बोस, 94-96. [12]उपरोक्त, 97. [13]यह अध्याय संकेत करता है कि नहेम्याह का अधिकार सीमित था। उदाहरण के लिए, उसने तोबिय्याह को दण्ड नहीं दिया, संभवत इसलिए क्योंकि तोबिय्याह भी एक प्रांत का हाकिम था और अपना अधिकार अर्तक्षत्र से रखता था। न ही नहेम्याह ने एल्याशीब को याजक पद से निकाला। [14]उदाहरण के लिए "विश्राम दिन को स्मरण रखने" (निर्गमन 20:8) का आदेश का तात्पर्य विश्रामदिन से संबंधित बातों के प्रति विशिष्ट तरीके से कार्य करना है। [15]किडनर, 130. [16]उस समयावधि में अशदोद में कौन सी भाषा बोली जाती थी, इसके बारे में अनिश्चितता बनी हुई है। एडविन एम. यामौची, "एज्रा - नहेम्याह," में *दि एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री,* वॉल्यूम 4, *1 राजा-अय्यूब,* संपादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1988), 765-66 की विचार विमर्श देखें। [17]डी. जे. ए. क्लाइंस, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर,* द न्यू सेन्चूरी बाइबल कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1984), 247. [18]उदाहरण के लिए सोविल ने कहा, "यह व्याख्या अस्पष्ट है कि ये केवल कुछ ही लोग थे" (सोविल, 263-64)। [19]संभवतः जोसेफस ने नहेम्याह के समय की इस घटना के कुछ अंश (13:28) को लगभग सौ वर्षों बाद घटित हुए घटना के साथ उलझाया होगा। एक और सम्बल्लत ने सामरिया में एक यहूदी याजक, योयादा महायाजक के भाई जिनको यरूशलेम के मन्दिर से निर्वासित किया होगा, के लिए एक मन्दिर बनाया। गेरेज़िम पहाड़ पर सामरियों का यह मन्दिर, लगभग ई.पू. 300 में बनाया गया था, जो मक्काबियों के समय तक बना रहा। (जोसेफस *एंटीकीटिज* 11.8.2, 4, 7.) [20]एच. ए. आयनसाइड ने इन दोनों तथ्यों पर नहेम्याह 13 पर अपनी टिप्पणी का परिचय देते हुए कि "नहेम्याह की सतर्कता पतन की विभिन्न स्थिति का पता लगाने और उनका निराकरण करने" के साथ-साथ "बहुत से लोगों का लिखित वचन से निरंतर फिर जाने" के बारे में कहा। (एच. ए. आयनसाइड, *नोट्स आन द बुक आफ एज्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर* [न्यू यॉर्कः लूजॉस्स ब्रदर्स, 1951], 142.)